मेचुका घाटी (MECHUKA VALLEY) में यूरेनियम

- अरुणाचल प्रदेश, चीन, म्यांमार और भूटान सीमा पर भारत का एक उत्तर पूर्वी राज्य है। अरूणाचल का अर्थ हिंदी में ''उगते सूर्य का पर्वत'' होता है।
- अरूणाचल प्रदेश तिब्बत (चीन) के साथ 1129 किलोमीटर सीमा साझा करता है। 1962 के भारत-चीन युद्ध के दौरान, अरूणाचल प्रदेश के आधे से भी ज्यादा हिस्से पर चीन ने (**PLA** ने) अस्थायी रूप से कब्जा कर लिया था। फिर अचानक चीन ने एक तरफा युद्ध विराम घोषित करते हुए अपनी सेना को मैकमोहन रेखा से पीछे बुला लिया। हालांकि इसके बाद भी चीन अरूणाचल प्रदेश को अपना हिस्सा बताता है। जिसे भारत एक सिरे से खारिज करता आया है।
- तबांग में स्थित बुमला दर्रा वर्ष 2006 में पहली बार व्यापार के लिए खोला गया।
- अरूणाचल प्रदेश के ऊपरी सुबांसिरी जिले में 'सारी चू' नदी के तट पर चीन ने एक स्थायी गांव बसा दिया है। इसके बाद से दोनों देशों के संबंध तनावपूर्ण हो गये हैं।
- अरूणाचल प्रदेश से **BJP** के सांसद तापिर गाओ का कहना है कि चीन ने मैकमोहन रेखा के अंदर भारत की तरफ स्थित 'बीसा' और 'माजा' के बीच एक हवाई पट्टी का भी निर्माण किया है।
- भारत जब भी अरूणाचल प्रदेश में पुल, बांध या सड़क निर्माण करता है तो चीन इसका विरोध करता है। उसका कहना है कि अरूणाचल प्रदेश में कोई निर्माण भारत द्वारा नहीं किया जा सकता है। और तो और चीन भारत के प्रधानमंत्री गृहमंत्री, अन्य मंत्रियों तथा दलाई लामा के अरूणाचल प्रदेश दौरे को गलत मानता है।
- चीन अरूणाचल प्रदेश के तवांग मठ पर अपना दावा करता है, जिसे एशिया का सबसे बड़ा बौद्ध मठ माना जाता है।
- **अब क्या हुआ है?**
- भारत के अरूणाचल पर्वतीय क्षेत्र में यूरेनियम मिलने की संभावना लंबे समय से व्यक्त की जा रही थी जिसकी खोज भारत ने कर लिया है।
- भारत-चीन सीमा से मात्र तीन किलोमीटर दूर अरूणाचल प्रदेश की मेचुका घाटी **(Mechuka Valley)** में यूरेनियम का भंडार मिला है।
- मेचुका घाटी क्षेत्र अरूणाचल प्रदेश के शिन्योमी जिले में लगभग 6000 फीट (1829 मीटर) की ऊँचाई पर स्थित एक छोटा सा घाटी व शहरी क्षेत्र है। मेन्चुका या मेचुका के पास स्थित मैकमोहन लाइन भारतीय क्षेत्र व चीनी क्षेत्र को अलग करती है।
- यह घाटी दुर्लभ क्षेत्र में है, जहां देवदार के घने वृक्ष एवं विषम पहाड़ियाँ हैं। यहां तक पहुँचने के पहले निकटतम हवाई अड्डा लीलाबाड़ी का प्रयोग किया जाता था। इसका प्रयोग वायुसेना करती थीं, लेकिन अब इसे सड़क मार्ग से जोड़ दिया गया है।
- परमाणु खनिज निदेशालय के निदेशक डीके सिन्हा का कहना है कि यह खोज जमीनी स्तर से लगभग 619 मीटर की गहराई में की गई है।
- यहाँ मिले यूरेनियम की खुदाई प्रारंभ हो चुकी है।

- परमाणु ईंधन परिसर **(Nuclear Fuel Complex-NFC)** के दिनेश श्रीवास्तव ने अरूणाचल प्रदेश में यूरेनियम उत्पादन के पीछे दो प्रमुख कारण बताये हैं-
  1. यहां पर आसानी से यूरेनियम मिलना।
  2. राजनीतिक परिस्थितियाँ- यहां राज्य और केंद्र सहयोग मजबूत होना तथा यहां के लोगों का सहयोग करना।
- यह माना जा रहा है कि इससे भारत की केंद्रिय एजेंसियों की उपस्थिति बढ़ेगी तथा राज्य में विकासात्मक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा।
- भारत इस समय स्वच्छ ऊर्जा **(Clean Energy)** को बढ़ावा देने का प्रयास कर रहा है, जिसे गति मिलेगी।
- पूर्वोत्तर भारत में यूरेनियम मिलने की सभावना है इसी कारण मणिपुर, नागालैण्ड, असम में भी यूरेनियम की खोज हो रही है।
- भारत में यूरेनियम के उत्पादन को बढ़ाने के लिए गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, पश्चिम बंगाल, झारखंड में भी खोज किया जा रहा है।
- यूरेनियम-
- यूरेनियम दुनिया सबसे महंगी खनिजों में से एक है, जिसका सर्वाधिक उपयोग ऊर्जा उत्पादन तथा परमाणु बम निर्माण में किया जाता है। इसे 'मेटल ऑफ होप' के नाम से जाना जाता है। इसका परमाणु क्रम 92 है।
- यूरेनियम प्रारंभ में अशुद्ध रूप में प्राप्त होता है, जिसके अयस्क से शुद्ध यूरेनियम प्राप्त होता है।
- यूरेनियम का 7 ग्राम का एक टुकड़ा 3.5 बैरल तेल व 807 किलोग्राम कोयला के बराबर ऊर्जा देता है। 1 किग्रा यूरेनियम से 24 हजार मेगावॉट के बराबर बिजली उत्पन्न हो ती है।
- यूरेनियम का सर्वाधिक भंडार ऑस्ट्रेलिया में (29%) है। इसके बाद कजाकिस्तान, रूस, कनाडा का स्थान आता है।
- वर्ष 2015 में दुनिया भर में यूरेनियम का उत्पादन 60,496% टन हुआ था पूरे दुनिया के 70% उत्पादन मात्र तीन देशों में है कजाकिस्तान, कनाड़ा और ऑस्ट्रेलिया में हुआ था।
- भारत में अभी जो यूरेनियम उत्पादित होता है वह न तो पर्याप्त है ओर न ही बहुत अच्छी क्वालिटी का है।

भारत के विदेशी मुद्रा भंडार ने रूस को पीछे छोड़ा

- भारत का विदेशी मुद्रा भंडार **(Forex Reserve)** रूस को पीछे छोड़ते हुए दुनिया का चौथा सबसे बड़ा विदेशी मुद्रा भंडार धारक बन गया है। भारत पहले पाचवें स्थान पर था।
- 12 मार्च को **RBI** द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार भारत का विदेशी मुद्रा भंडार 580.3 अरब डॉलर (बिलियन डॉलर) है। रूस का विदेशी मुद्रा भंडार भारत से थोड़ा ही कम 580.1 अरब डॉलर है।
- हाल के समय में भारत ने अपने विदेशी मुद्रा भंडार को बढ़ाया नहीं है, बल्कि रूस के विदेशी मुद्रा भंडार के मूल्य में कमी आने के कारण भारत चौथे स्थान पर आ गया है।
- अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष **(IMF)** के मुताबिक सबसे बड़ा विदेशी मुद्रा भंडार चीन के पास है। दूसरे स्थान पर जापान, तीसरे स्थान पर स्विट्जरलैण्ड, चौथे स्थान पर भारत और पाँचवे स्थान पर रूस हैं।
- भारत का यह विदेशी मुद्रा भंडार 18 माह के आयात के लिए पर्याप्त है। 1991 में भारत का विदेशी मुद्रा भंडार समाप्त हो गया था और हमारे पास लगभग एक से दो सप्ताह की आवश्यकता पूर्ति के लिए विदेशी मुद्रा भंडार बचा था।
- विदेशी मुद्रा भंडार-
- इसे फॉरेक्स रिजर्व या आरक्षित निधियों का भंडार भी कहा जाता है।
- किसी देश के विदेशी मुद्रा भंडार में निम्नलिखित 4 तत्त्व शामिल होते हैं।

1. स्वर्ण भंडार
2. विदेशी परिसंपत्तियाँ (विदेशी मुद्रा, विदेशी कंपनियों के शेयर, डिबेंचर या बांड)
3. **IMF** के पास रिजर्व ट्रैंच
4. विशेष आहरण अधिकार **(SDR)**

- विदेशी मुद्रा भंडारों को भुगतान संतुलन में 'आरक्षित परिसंपत्तियाँ' कहा जाता है।
- इसे किसी देश की अंतर्राष्ट्रीय निवेश का एक महत्त्वपूर्ण प्रदर्शन सूचक भी माना जाता है क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय निवेश ज्यादा होने का अर्थ है अधिक विदेशी मुद्रा भंडार का आना।
- **RBI** भारत में विदेशी मुद्रा भंडार के संरक्षक एवं प्रबंधक के रूप में कार्य करता है। **RBI** डॉलर के मूल्य में होने वाले उतार-चढ़ाव को नियंत्रित करने के लिए इस भंडार का प्रयोग करता है।
- **RBI** रुपया कमजोर होने पर डॉलर को बेंचता है तथा रुपया मजबूत होने पर पुन: डॉलर को खरीद लेता है।
- भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम 1934 **RBI** को विभिन्न मुद्रा अस्तियों **(Assets)** में अपने विदेशी मुद्रा भंडार की उपलब्धता को सुनिश्चित करने का अधिकार प्रदान करता है।
- अधिक/बड़ा विदेशी मुद्रा भंडार के लाभ
- आंतरिक एवं वाह्य वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति आसान होती है।
- विदेशी मुद्रा बाजार में अस्थिरता कम करने में सहायक होता है।
- भारतीय रुपया डॉलर के सापेक्ष मजबूत रहता है।
- निवेशकों को आकर्षक वातावरण प्रदान करता है।
- राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय आपदाओं का सामना आसानी से हो पाता है।

DOMESTIC SYSTEMICALLY IMPORTANT BANK (DSIB)

- प्रत्येक देश के कुछ ऐसे महत्वपूर्ण बैंक होते हैं, जिनका आधार और नेटवर्क बड़ा होता है। इन बैंकों पर लोगों का भरोशा भी ज्यादा होता है और पूंजी भी। ऐसे में यदि यह बैंक डूबते हैं तो कई प्रकार की समस्या उत्पन्न हो सकती हैं। इस कारण वैश्विक सहमति और दृष्टिकोण यह मानता है कि यदि इन बैंकों के सामने ऐसी कोई चुनौती आती है तो इन्हें सरकारी मदद मिलनी चाहिए या हर संभव वह प्रयास करना चाहिए जिससे बैंक डूबे न।
- पृष्ठभूमि-
- वर्ष 2008 में अमेरिका में जब मंदी आई थी उस समय अमेरिका का चौथा सबसे बड़ा बैंक, जिसका नाम लेहमन ब्रदर्स था, वह डूब गया। वर्ष 2008 में उसकी पूंजी 680 बिलियन यूएस डॉलर थी। इस समय **SBI** का एसेट साइज लगभग 590 बिलियन यूएस डॉलर है।
- इस बैंक के डूबने के बाद यूएस कैपिटल मार्केट में एक प्रकार का भूचाल आ गया और बैंकिंग व्यवस्था पर कई तरह की बातें उठनें लगी।
- यहाँ से **Domestic Systemically Important Bank (DSIB)** की अवधारणा विकसित हुई। इसकें अंतर्गत देश अपने यहां के महत्त्वपूर्ण बैंकों को इस सूची में शामिल करते हैं और उनके फेल होने की स्थिति में हर संभव मदद किया जाता है।
- **DSIB** की टैग लाइन **Too Big To Fail** है। इसका आशय यह है कि यह वह बैंक हैं जिनके डूबने की संभावना कम है।
- दूसरे शब्दों में **DSIB** वह बैंक है जो किसी भी विषम स्थिति में अपने को संभाल सकता है और सरकार भी प्रयास करेगी कि यह बैंक न डूबने पायें क्योंकि इससे वित्तीय प्रवाह पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।
- बैंकिंग पर्यवेक्षण पर बेसल समिति ने अक्टूबर 2012 में **DSIB** से संबंधित अपनी रूपरेखा को अंतिम रूप दिया था। भारत में **RBI** ने वर्ष 2014 में **DSIB** संबंधित रूपरेखा जारी की थी।
- **DSIB** में शामिल करने के लिए मूल्यांकन के आधार के रूप में बैंक के आकार, परस्पर संबंध, प्रतिस्थापन की स्थिति, कार्यकारी जटिलता, बैंकिंग परफार्मेंस का उपयोग किया जताा है। इन आधारों पर **RBI** द्वारा एक कट ऑफ स्कोर का निर्धारण किया जाता है।, और उसके आधार पर इन्हें **DSIB** में शामिल किया जाता है।
- भारत में **DSIB** को रेगुलेट या उनका निर्धारण **RBI** द्वारा किया जाता है। इसमें वही बैंक शामिल हो सकता है जिसके एसेट **(Assets)** का आकार उस देश की **GDP** के 2 प्रतिशत से अधिक हो।
- वर्ष 2015 में सर्वप्रथम **SBI** को **D-SIB** के रूप में शामिल किया गया। अगले साल (2016) में इसमें **ICICI** और 2017 में **HDFC** को इसमें शामिल किया गया। अभी भी यही तीनों बैंक इस सूची में शामिल हैं।
- नवंबर 2019 में भारतीय **GDP** का आकार 2.936 ट्रिलियन यूएस डॉलर था। नवंबर 2019 के आकड़ों के ही अनुसार **SBI** का कुल एसेट साइज **GDP** का 18 प्रतिशत (530 बिलियन **USD**), **HDFC** का एसेट साइज 170 बिलियन यूएस डॉलर था जो **GDP** का 5.7 प्रतिशत था तथा **ICICI** का एसेट साइज 136 बिलियन यूएस डॉलर जो **GDP** का 4.4 प्रतिशत था।

- **D-SIB** से अपेक्षा की जाती है कि वे रिस्क वेटेड एसेट्स **(RWAs)** के 0.20 प्रतिशत से 0.80 प्रतिशत के बीच अतिरिक्त सामान्य इक्विटी टीयर-1 **(CET-1)** पूंजी की आवश्यकता को बनाये रखें।
- टीयर-1 पूंजी सामान्यत: वह पूंजी होती है जो बैंक की खुद की संपत्ति होती है। इस पूंजी का ज्यादा होना बैंक के लिए अच्छा माना जाता है। टीयर-2 पूंजी बैंक का प्रयोग जब बैंक करने लगते हैं तो इसका आशय यह होता है कि उस बैंक की आर्थिक स्थिति ज्यादा ठीक नहीं है।
- टीयर-1 रेशियों = टीयर-1 कैपिटल/रिस्क वेटेड एसेट × 100
- माना **RWA = 500** करोड़

  Case-1 = 5/500 × 100 = 1%
  Case-2 = 50/500 × 100 = 10%
- बैंकों को टीयर-1 पूंजी 10.5 प्रतिशत रखनी होती है जो **DSIB** के लिए इससे 0.20 से 0.80 प्रतिशत अधिक होती है।
- **Too Big to Fail** में शामिल बैंकों को देश के अंदर और बाहर से आसानी से पैसा मिल पाता है।
- हाल ही में **RBI** ने **DSIB** की सूची जारी करते हुए **SBI, ICICI** और **HDFC** को बनाये रखा है।
- बैंकों की तरह ही इंश्योरंस कंपनी की भी घरेलू-प्रणालीगत महत्वपूर्ण बीमाकर्ता **(D-SII)** सूची होती है, जिसे **IRDAI** द्वारा जारी किया जाता है। वर्ष 2020-21 के लिए भारतीय जीवन बीमा निगम **(LIC),** जनरल इंश्योरेंस कॉरपोरेशन ऑफ इण्डिया **(GIC)** और न्यू इंडिया इंश्योरेंस कंपनी को **D-SII** के रूप में शामिल किया गया है।
- **DSIB** की तरह **D-SII** भी बड़े आकार, बाजार महत्व और घरेलू तथा वैश्विक परस्पर संबंध वाले ऐसे बीमाकर्ता हैं, जिनकी विफलता के कारण घरेलू बीमा एवं वित्तीय प्रणाली के समक्ष गंभीर संकट उत्पन्न हो सकता है।